राष्ट्रीय संगोष्ठी

''भारतीय वाङ्मय में विज्ञान एवं तकनीकी : अनुसंधान एवं अनुशीलन''

9 एवं 10 फरवरी, 2019

संरक्षक

प्रो. रामदेव भारद्वाज
कुलपति, अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

डॉ. सुनील कुमार पारे
कुलसचिव, अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

संयोजक

डॉ. प्रज्ञेश कुमार अग्रवाल
संकायाध्यक्ष, आधारभूत विज्ञान संकाय,
अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रमुख वक्ता

प्रो. डी. पी. सिंह, अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली; **श्री अरविंद पी. जमखेड़कर,** अध्यक्ष, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली; **प्रो. वी. के मल्होत्रा,** सदस्य सचिव, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली; **प्रो. ईश्वरशरण विश्वकर्मा,** अध्यक्ष, उत्तरप्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा चयन आयोग, इलाहाबाद; **श्री बालमुकुन्द पाण्डेय,** राष्ट्रीय संगठन सचिव, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली; **प्रो. अनिल सहस्त्रबुद्धे,** अध्यक्ष, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली; **श्री जयंतराव सहस्त्रबुद्धे,** राष्ट्रीय संगठन सचिव, विज्ञान भारती, नई दिल्ली; **प्रो. अखिलेश पाण्डेय,** अध्यक्ष, निजी विश्वविद्यालय नियामक आयोग, मध्यप्रदेश, भोपाल; **डॉ. सोमदेव भारद्वाज,** संगठन सचिव, विज्ञान भारती, नई दिल्ली; **डॉ. उमेश शुक्ल,** प्राचार्य, पं. खुशीलाल आयुर्वेदिक महाविद्यालय, भोपाल; **डॉ. सुनील कुमार,** कुलपति, राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भोपाल; **डॉ. आर. एस. शर्मा,** कुलपति, म.प्र. आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर; **प्रो. एस. पी. गौतम,** पूर्व अध्यक्ष, म.प्र. लोक सेवा आयोग, जबलपुर; **प्रो. भास्कर चौबे,** अध्यक्ष, म.प्र. लोक सेवा आयोग, इन्दौर; **डॉ. प्रयागदत्त जुयाल,** कुलपति, नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर; **प्रो. नवीन चंद्रा,** महानिदेशक, मध्यप्रदेश विज्ञान एवं तकनीकी परिषद; **डॉ. महेन्द्र गुप्ता,** प्राध्यापक, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, म.प्र.; **श्री मयंक बड़जात्या,** वास्तुकार, पुणे।

संपर्क सूत्र

डॉ. प्रज्ञेश कुमार अग्रवाल
संकायाध्यक्ष, आधारभूत विज्ञान संकाय,
अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय,
माता निर्मला देवी मार्ग, राजहर्ष कालोनी, कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.)
मो.नं.–9926320428, ई–मेल : stril.abvhv@gmail.com

राष्ट्रीय संगोष्ठी

''भारतीय वाङ्मय में विज्ञान एवं तकनीकी : अनुसंधान एवं अनुशीलन''

9 एवं 10 फरवरी, 2019

आयोजक

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय
माता निर्मला देवी मार्ग, राजहर्ष कालोनी, कोलार रोड, भोपाल म.प्र.–462042
(वेबस्थल www.abvhv.edu.in; दूरभाष–2491052)
(ई–मेल : stril.abvhv@gmail.com)

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

राष्ट्रीय संगोष्ठी

''भारतीय वाङ्मय में विज्ञान एवं तकनीकी : अनुसंधान एवं अनुशीलन''

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल एवं भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में **''भारतीय वाङ्मय में विज्ञान एवं तकनीकी : अनुसंधान एवं अनुशीलन''** विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 9 एवं 10 फरवरी, 2019 को विश्वविद्यालय में किया जाना निश्चित हुआ है। इस संगोष्ठी में आप सादर आमंत्रित हैं।

सामान्यतः यह धारणा है कि विज्ञान अर्थात् ''पश्चिमी विज्ञान'' अर्थात् यूरोपीय आविष्कार एवं तकनीकी यंत्रों का ज्ञान ही विज्ञान हैं। हम यूरो–विज्ञान केन्द्रित हैं। यह प्रचलित और प्रसारित हुआ है कि भारत में कोई वैज्ञानिक दृष्टि और वैज्ञानिक समझ नहीं थी परन्तु यह धारणा कितनी सत्य हैं, इसकी समीक्षा एवं विश्लेषण के लिए दो दिवसीय विमर्श का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। भारतीय विज्ञान वाङ्मय में मूलतः दो विधाऐं प्रचलित रही हैं। प्रथम गणित और खगोलशास्त्र तथा द्वितीय औषधि विज्ञान। प्राचीन भारतीय गणितीय सूत्र प्रयोगसिद्ध अंकीय आविष्कार है, जिसके आधार पर कालान्तर में ज्यामितीय प्रमेय बने। स्थानिक अंकों का महत्वपूर्ण आविष्कार तथा 'शून्य' के लिए संकेत भारतीय गणितज्ञों ने ही दिए हैं। खगोलशास्त्र के पाँच सिद्धान्त पितामह, वशिष्ठ, सूर्य, पोलिश और रोमक हैं, यह परम्परा सतत रही। पाँचवी शताब्दी में आर्यभट्ट, छठवीं शताब्दी में वराहमिहिर, सातवीं शताब्दी में ब्रह्मगुप्त, नवीं शताब्दी में महावीर, दसवीं शताब्दी में श्रीधर, बारहवीं शताब्दी में भास्कराचार्य का योगदान महत्वपूर्ण है।

कणाद ऋषि (2500 ई.पू.) को परमाणु शास्त्र का जनक मानते हैं जिनके सिद्धांतों के आधार पर ओपनहाइमर ने 1954 में पहला परमाणु परीक्षण किया। भरद्वाज ऋषि (600 ई.पू.) ने वायुयान निर्माण के सिद्धान्त दिए। ऋषि बोधायन (800 ई.पू.) ने ज्यामिति के सूत्र दिए। रेखागणित, त्रिकोणमिति, शुल्ब शास्त्र में समभुज, चतुर्भुज, बोधायन की ही देन है। ऋषि आर्यभट्ट ने खगोलीय सूत्र दिए। भास्कराचार्य सिद्धान्त शिरोमणी में गुरूत्वाकर्षण के सिद्धान्त प्रतिपादित किए गए हैं। ऋषि चरक (300 ई.पू.) की 'चरक संहिता' आर्युवेद का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। धनवन्तरी, च्यवन और सुश्रुत ने पेड़–पौधों और वनस्पति आधारित आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्र दिया। चरक संहिता में शरीर विज्ञान, गर्भ शास्त्र, रत्नामिसरण शास्त्र, औषधि शास्त्र, मधुमेह, क्षयरोग, हृदयविकार पर औषधोपचार ज्ञान समाहित है। सुश्रुत (2600 ई.पू.) द्वारा रचित सुश्रुत संहिता में शल्यक्रिया, प्लास्टिक सर्जरी, प्रसव, मोतियाबिन्द, कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण एवं पथरी की जटिल व्याधियों के निदान हैं। नागार्जुन द्वारा रचित ''रसरत्नाकर'' और ''रसेन्द्र मंगल'' प्रमुख ग्रंथ हैं जिनमें रसायन शास्त्र और धातु विज्ञान की विस्तृत जानकारी है। महर्षि अगस्त्य द्वारा रचित ''अगस्त्य संहिता'' में विद्युत निर्माण की पद्धति का वर्णन है।

चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में 'चरक संहिता' रसायन शास्त्र के क्षेत्र में नार्गाजुन की कृतियाँ रसरत्नाकर, कक्षपुटतंत्र, आरोग्य मंजरी, योगसार, योगाष्टक, वाङ्मय की कृति रसरत्न समुच्चय, गोविन्दाचार्य की कृति रसार्णव, यशोधर की कृति रस प्रकाश सुधाकर, रामचंद्र की कृति रसेन्द्र चिंतामणि, सोमदेव की रसेन्द्र चूणामणि अद्वितीय कृतियाँ हैं। उनका समग्र चिन्तन आज के अध्ययन एवं अध्यापन की अनिवार्यता है। वनस्पति विज्ञान के क्षेत्र में वैदिक काल से ही भारतीय ऋषियों के महत्वपूर्ण योगदान रहे हैं। ''पौधों में जीवन होता है,'' की धारणा महर्षि भरद्वाज और भृगु संवाद (महाभारत के शान्तिपर्व के 184 अध्याय) के साथ–साथ महर्षि चरक के सिद्धान्त 'तच्येतलावद् चेतनज्य' में प्राणियों की भाँति वृक्षों में चेतना का बोध कराती है। महर्षि पाराशर के ग्रन्थ 'वृक्ष आर्युवेद' में इस अवधारणा की सम्पूर्ण विवेचना की गई है।

भारतीय वाङ्मय में वैज्ञानिक दृष्टि और परम्परा के साथ–साथ वैज्ञानिक अनुसंधान की दिशाए जीवन और विज्ञान के क्षेत्र में मौलिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन करती हैं। अनेक ऋषियों ने वैज्ञानिक शोध एवं अनुसंधान की दिशा के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। उदाहरण के लिए भृगु, वशिष्ठ, भारद्वाज, अत्रि, गर्ग, शौनक, शुक्र, नारद, चक्रायण, धुंडीनाथ, नंदीश, कश्यप, अगस्त्य, परशुराम, द्रोण, दीर्घतमस आदि ऐसे अनेक ऋषि हुए हैं जिन्होंने विमान विद्या, नक्षत्र विज्ञान, रसायन विज्ञान, अस्त्र–शस्त्र रचना, जहाज निर्माण और जीवन के सभी क्षेत्रों में काम किया है। भृगु अपने शिल्प शास्त्र में शिल्प की परिभाषा करते हुए जो लिखते हैं उससे ज्ञान की परिधि कितनी व्यापक थी, इसकी कल्पना की जा सकती है। भारतीय ग्रंथों में कृषि शास्त्र, जल शास्त्र, खनिज शास्त्र, नौका शास्त्र, रथ शास्त्र, अग्नि शास्त्र, नगर रचना, यंत्र शास्त्र इसके अतिरिक्त 32 प्रकार की विधाएं तथा 64 प्रकार की कलाओं का उल्लेख आता है। इनमें धातु विज्ञान, वस्त्र विज्ञान, स्वास्थ्य, कृषि, बांध निर्माण, वन रोपणी, युद्ध, शस्त्र, पुल निर्माण, मृदा शास्त्र, नौका, रथ, विमान, नगर रचना, गृह निर्माण, स्वास्थ्य, जीवन शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, भोजन बनाना, बालसंगोपन, राज्य संचालन, आमोद–प्रमोद आदि आते थे। इस विषय सूची को देखकर लगता है कि इनकी परिधि संपूर्ण जीवन को समाहित करने वाली थी। इन विधाओं के अनेक ग्रंथ थे। कितनी ही लुप्त हो गयीं। कई विधाएँ जानने वालों के साथ ही लुप्त हो गयीं क्योंकि हमारे यहाँ एक मान्यता रही है कि अनधिकारी के हाथ में विद्या नहीं जानी चाहिए। यह सत्य है कि बहुत सा ज्ञान लुप्त हो गया, परन्तु आज भी लाखों पांडुलिपियां उपलब्ध हैं; आवश्यकता है उनके संरक्षण, संवर्धन, अध्ययन, विश्लेषण, शोध एवं प्रयोग की।

आज प्रायः भारतीय, भारतीय ज्ञान और विज्ञान परम्परा को उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं। इस पर गहन विमर्श की आवश्यकता है कि ऐसा क्यों? भारतीय विज्ञान और तकनीकी के गूढ़ रहस्यों को जानने की आवश्यकता है। ऐसे वैज्ञानिकों तथा शोधार्थियों की आवश्यकता है जो भारतीय वाङ्मय में व्याप्त वैज्ञानिक तत्वों, साहित्य और संचित ज्ञान को सही अर्थों में समाज के समक्ष लाए। पश्चिम के हाइजनबर्ग, बोहर, श्रोडिंगर जैसे वैज्ञानिकों ने भारतीय विज्ञान दर्शन के प्रभावों को स्वीकार किया है। अतः भारतीय विज्ञान की प्राचीन उपलब्धियों और परम्पराओं को पुनर्जीवित एवं पुनर्स्थापित करने की दिशा में इस प्रकार की संगोष्ठी सार्थक सिद्ध होगी।

संगोष्ठी में विमर्श को 4 तकनीकी सत्रों में वर्गीकृत किया गया है।

संगोष्ठी के तकनीकी सत्र

1. भारतीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी पद्धतियाँ
2. भारतीय भेषज एवं शल्य चिकित्सा विज्ञान
3. खगोल शास्त्र एवं अभियांत्रिकी में भारतीय चिंतन
4. मौलिक भारतीय शोध का उन्नयन, प्रोत्साहन एवं प्रचार–प्रसार

संगोष्ठी के तकनीकी सत्रों के विषयों में से किसी एक पर अपना शोध पत्र सारांश तथा विस्तृत शोध पत्र मेल–आईडी stril.abvhv@gmail.com पर या निम्न पते पर भेज सकते है– **डॉ. प्रज्ञेश कुमार अग्रवाल,** संयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी, अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, माता निर्मला देवी मार्ग, राजहर्ष कालोनी, कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.)।

शोध पत्र का सारांश एवं पूर्ण पत्र भेजने हेतु स्मरणीय बिंदु

❖ भाषा – हिंदी ❖ शब्द सीमा : सारांश – 300 शब्द, पूर्ण शोध प्त्र – 2500 शब्द ❖ फॉण्ट – मंगल / यूनिकोड / कृतिदेव / देवलिस, फॉण्ट साइज–14 ❖ फाईल का प्रकार : एम.एस.वर्ड डाक्यूमेंट फाईल

विशेष

1. प्रस्तुति में प्रथम एवं द्वितीय स्थान पर चयनित मौलिक शोध पत्रों को विश्वविद्यालय द्वारा पुरस्कृत किया जायेगा।
2. **पंजीयन शुल्क** प्राध्यापकों के लिए 300 रूपये (तीन सौ रूपये) एवं शोधार्थियों तथा विद्यार्थियों हेतु 150 रूपये (एक सौ पचास रूपये) रखा गया है।
3. **महत्वपूर्ण तिथियाँ** : शोध सारांश प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 15 जनवरी, 2019; संपूर्ण शोध पत्र प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 31 जनवरी, 2019 तथा पंजीयन की अंतिम तिथि 31 जनवरी, 2019 है।
4. प्रतिभागियों को किसी भी प्रकार का आवास भत्ता या आवागमन भत्ता नहीं दिया जायेगा।